इकाई 4 हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था एवं सामग्री

रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 हिन्दी शिक्षण में पाठ्य पुस्तकों एवं सहायक पुस्तकों का महत्व, स्वरूप एवं उनकी रचना प्रक्रिया।

- 4.3.1. हिन्दी पाठ्य पुस्तक का स्वरूप
- 4.3.2. पाठ्य पुस्तक के गुण
- 4.3.3. अध्ययन पक्ष
- 4.3.4. पाठ्य सामग्री का प्रस्तुतीकरण
- 4.3.5. अभ्यास
- 4.3.6. हिन्दी भाषा शिक्षण की पाठ्य पुस्तक का रूपात्मक पक्ष
- 4.3.7. सहायक पुस्तकों का निर्माण

4.4 हिन्दी शिक्षण में दृश्य श्रव्य सामग्री का प्रयोग

- 4.4.1. यांत्रिक दृश्य उपकरण
- 4.4.2. सहज दृश्य साधन
- 4.4.3. यांत्रिक श्रव्य उपकरण
- 4.4.4. श्रव्य के सहज साधन
- 4.4.5. दृश्य श्रव्य यान्त्रिक उपकरण
- 4.4.6. दृश्य श्रव्य के सहज साधन
- 4.4.7. उदाहरण एवं साक्ष्य, दृश्य एवं मौखिक

4.5 हिन्दी शिक्षण में पाठ्य सहगामी क्रियाएँ एवं उनकी उपयोगिता।

- 4.5.1. उपयोगिता एवं महत्व
- 4.5.2. पाठ्यचर्या सहगामी क्रियाएँ

4.6 हिन्दी शिक्षक के गुण एवं अपेक्षाएँ।

- 4.6.1. शिक्षक के गुण
- 4.6.2. हिन्दी शिक्षक से अपेक्षाएँ

4.7 सारांश

- 4.7.1. महत्व
- 4.7.2. स्वरूप
- 4.7.3. हिन्दी भाषा शिक्षण में श्रव्य दृश्य सामग्री
- 4.7.4. हिंन्दी शिक्षण में पाठ्य सहगामी क्रियाएँ
- 4.7.5. हिन्दी शिक्षक के गुण

4.8 प्रश्नों के उत्तर

4.9 उपयोगी पुस्तकें

4.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में हमने जाना कि पाठ्यक्रम में भाषा का क्या स्थान है; मातृभाषा की क्या अवधारणा है एवं मातृभाषा शिक्षण के क्या उद्देश्य हैं तथा विद्यालयीय पाठ्यचर्या में हिन्दी भाषा का स्थान क्या है? साथ ही हमने यह भी जाना कि प्रथम, द्वितीय एवं अन्य भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों में क्या अन्तर है?

इस इकाई में हम हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था एवं विषय सामग्री के अंतर्गत हिन्दी की पाठ्य पुस्तक का महत्व, उसका स्वरूप, निर्माण-सिद्धांत, उसकी रचना प्रक्रिया एवं विशेषताओं का परिचय प्राप्त करेंगे।

साथ ही हिन्दी शिक्षण में दृश्य श्रव्य सामग्री एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं की प्रभाविता एवं उनके प्रयोग पर भी विचार करेंगे। इसके अतिरिक्त यह भी विवेचन करेंगे कि एक हिन्दी शिक्षक से क्या-क्या अपेक्षाएँ की जाती हैं और उसमें कौन -कौन से गुण होने चाहिए।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- हिन्दी शिक्षण में पाठ्य पुस्तक के महत्व का विवेचन कर सकेंगे।
- हिन्दी की पाठ्य पुस्तक तथा सहायक पुस्तकों के स्वरूप, निर्माण-सिद्धांत एवं उनकी विशेषताएं बता सकेंगे।
- हिन्दी शिक्षण के उपयुक्त दृश्य श्रव्य सामग्री का प्रयोग कर सकेंगे।
- हिन्दी शिक्षण में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के महत्व को समझकर उनका आयोजन करने में समर्थ हो सकेंगे।
- हिन्दी शिक्षक में अपेक्षित गुणों एवं विशेषताओं की जानकारी प्राप्त कर उन्हें अपनाने के लिए प्रेरित होंगे।

4.3 हिन्दी शिक्षण में पाठ्य पुस्तकों एवं सहायक पुस्तकों का महत्व, स्वरूप एवं उनकी रचना प्रक्रिया

आइए विचार करें कि हिन्दी शिक्षण में पाठ्य पुस्तकों का क्या महत्व है?

- हिन्दी पाठ्य पुस्तक कक्षा के लिए आधार का कार्य करती है। इसके द्वारा पाठ्य विषय, कविता, कहानी, लेख, निबन्ध, एकांकी, आदि का स्वरूप सामने आ जाता है।
- पाठ्य पुस्तक से हिन्दी के शिक्षक पाठ्य सामग्री को विभिन्न पाठों एवं इकाइयों में विभाजित करके व्यवस्थित रुप में प्रस्तुत कर लेते हैं।
- पाठ्य पुस्तक शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों के लिये प्रतिदिन संचेतक की तरह कार्य करती है। शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों ही अपने विषय सीमा के विस्तार के प्रति सतर्क एवं अवगत रहते हैं।
- पाठ्य पुस्तक बालकों को स्वाध्याय के लिये प्रेरित करती है। आवृत्ति के लिये भी यह बहुत उपयोगी सिद्ध होती है। बालक विषय सामग्री को सरलता से ही आत्मसात कर लेते हैं।
- सामूहिक शिक्षण व्यवस्था में पाठ्य पुस्तक बहुत ही आवश्यक एवं उत्तम शैक्षिक साधन है। भाषा व साहित्य के अध्ययन अध्यापन में पाठय पुस्तक अनिवार्य है।
- पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से पाठ्य सामग्री के रूप में साहित्य, संस्कृति, धर्म, कला, भूगोल, इतिहास, ज्ञान-विज्ञान, वाणिज्य-उद्योग, व्यापार, मनोरंजन, खेलकूद आदि अनेक प्रकार के विषयों का समावेश होता है। इस प्रकार हिन्दी शिक्षण में अनेक स्रोतों से प्राप्त पाठ्य सामग्री एकत्र उपलब्ध होती है।

4.3.1 हिन्दी पाठ्य पुस्तक का स्वरूप

पाठ्य पुस्तक के दो पक्ष होते हैं अध्ययन पक्ष एवं रूपात्मक पक्ष।

अध्ययन पक्ष के अंतर्गत विषय सामग्री सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, उसके चयन व संगठन का विशेष महत्व है ताकि विद्यार्थी का ज्ञान विकसित हो सके। बाह्य अथवा रूपात्मक पक्ष में पाठ्य पुस्तक का स्वरूप अच्छी जिल्द से युक्त आकर्षक, मुद्रण स्पष्ट व पठनीय, कागज उत्तम स्तर का एवं अधिक समय तक चलने वाला तथा अच्छी प्रकार के टाइप का होना सम्मिलित है।

4.3.2 पाठ्य पुस्तक के गुण

1. भाषा ज्ञान की वृद्धि

भाषा की पाठ्य पुस्तक का प्रथम गुण है - भाषा ज्ञान की वृद्धि। अतः प्रत्येक पाठ में ज्ञान-विज्ञान की चर्चा सामान्य जानकारी तक सीमित हो एवं भाषा ज्ञान एवं कौशल की वृद्धि पर विशेष ध्यान देना अभीष्ट है।

2. उपयुक्तता

भाषा शिक्षण की पुस्तक प्राथमिक, माध्यमिक, वरिष्ठ माध्यमिक कक्षाओं एवं बालकों की आयु एवं बोध के अनुरूप हो, ताकि इस आयु के आधार पर पाठ्य पुस्तकों का उपयोग उनके व्यक्तित्व के उत्तरोत्तर वृद्धि का साधन बन सके।

3. रोचकता

रुचि से अध्ययन सरल बन जाता है। रुचि का सिद्धांत एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है, अत: पुस्तकों में रुचिकर सामग्री का संकलन अधिक अपेक्षित है।

4. जीवन से सम्बद्धता

शिक्षा का सम्बन्ध शिक्षार्थी के वर्तमान तथा भावी जीवन से होता है अत: पाठ्य पुस्तकों का निर्माण करते समय उन्हें जीवन के अनुभवों से सम्बन्धित करना अभीष्ट है।

5. क्रमबद्धता

पाठ्य पुस्तक के पाठों का आयोजन सरल से जटिल की ओर के शिक्षा सूत्र पर किया जाना चाहिए ताकि छात्रों को बोधगम्य प्रतीत हो एवं वे विषय बोध के साथ-साथ भाषिक तत्वों का क्रमिक ज्ञान प्राप्त कर सकें।

6. आदर्शवादिता

पाठ्य पुस्तकों का निर्माण करते समय देश, संस्कृति इतिहास के आदर्शों से युक्त पाठों का संकलन आवश्यक है ताकि छात्र नयां संदेश एवं प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन में आदर्श एवं मूल्यों की स्थापना कर सकें।

7. व्यवहारिकता

पाठ्य पुस्तकों की संरचना में ध्यान दिया जाना चाहिए कि वे छात्रों की व्यावहारिक बुद्धि का विकास कर सकें एवं उन्हें लोकाचार की शिक्षा दे सकें।

8. भाषा की शुद्धता

हिन्दी भाषा शिक्षण की पाठ्य पुस्तक भाषा की दृष्टि से शुद्ध होनी चाहिए ताकि छात्र अपनी भाषा शुद्ध कर सकें एवं अपनी भाषा की त्रुटियों का सुधार कर सकें। शुद्धता के अन्तर्गत वर्तनी, विरामचिन्हों के प्रयोग, व्याकरण, वाक्य रचना तथा शब्दप्रयोग पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। पाठ्य पुस्तक शिक्षार्थी के लिए आदर्श होती है अत: पाठ्यपुस्तक में निहित कोई भी अशुद्धि उस के भाषा ज्ञान को दूषित कर सकती है।

9. विविधता

हिन्दी भाषा की पाठ्य पुस्तक के निर्माण में यह अति महत्वपूर्ण तथ्य है कि पुस्तक में साहित्य की सभी विधाओं-गद्य, पद्य, नाटक, निबन्ध, कहानी, संस्मरण आदि का संकलन हो। हिन्दी भाषा की पुस्तक सभी विधाओं का प्रतिनिधित्व कर सके। साथ ही प्रत्येक काल की रचनाओं का संकलन भी इसे विविधता प्रदान करेगा। इसके अतिरिक्त इन विध ाओं में शैलीगत विविधता हो यथा तुकान्त-अतुकान्त कविता प्रत्येक रस का आस्वादन भी आवश्यक है। इसी प्रकार प्रकृति - वर्णनात्मक, भावात्मक, कथात्मक, विचारत्मक लेखों का संकलन पाठय पुस्तक को विविधता प्रदान करता है।

4.3.3 अध्ययन पक्ष

अध्ययन पक्ष का मूल सन्दर्भ पाठ्य सामग्री से है। इस से शिक्षार्थी साहित्य के अपार भंडार से चुने हुए महत्वपूर्ण अंशों के अध्ययन से साहित्य एवं संस्कृति का आवश्यक प्राथमिक परिचय प्राप्त कर सकता है। अध्ययन पक्ष की समुचित व्यवस्था से वह साहित्य प्रासाद के प्रवेश द्वार पर खड़ा हो सकता है जहाँ से वह साहित्य संस्कृति तथा ज्ञान एवं विज्ञान के विस्तृत उपवन से अपनी रुचि के अनुसार पुष्पों एवं फलों का आस्वादन कर सकता है।

पाठ्य सामग्री

पुस्तक की पाठय सामग्री विचार की दृष्टि से समृद्ध एवं स्तरीय होनी चाहिए। यह साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे - कहानी, कविता, लेख, निबन्ध, संस्मरण आदि से परिपूर्ण होनी चाहिए। साथ ही भाषिक पाठ्य सामग्री का ध्यान रखना भी आवश्यक है। भाषा सरल, स्पष्ट, शुद्ध तथा ग्रहणीय एवं विधा के अनुरूप होने पर ही भाषिक आवश्यकताओं को पूर्ण कर पाती है।

1. **उद्देश्य**

हमने पिछली इकाई में मातृभाषा शिक्षण के उद्देश्यों पर विचार किया है, अत: पाठ्य पुस्तक की पाठ्य सामग्री से इन उद्देश्यों की पूर्ति होनी चाहिए। विशेष रूप से ज्ञान का विकास, बोधगम्यता, मौलिकता, साहित्यिक रसानुभूति, साहित्यिक रुचि का विकास एवं वांछित अभिवृत्तियों का पोषण करने वाली विषय सामग्री भाषा-पुस्तक की आत्मा है।

2. **राष्ट्रीय लक्ष्य**

राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए पाठ्य सामग्री एक महत्वपूर्ण साधन है। अत: पाठ्य पुस्तक की पाठ्य सामग्री, राष्ट्रीय लक्ष्य यथा - एकता, जनतंत्र, सामाजिकता, धर्म निरपेक्षता आदि को समाहित करने वाली होनी चाहिए। इसमें राष्ट प्रेम, नागरिकता का प्रशिक्षण, राष्ट्रीय सम्पत्ति की रक्षा, सामाजिक स्वास्थ्य, जनसंख्या नियन्त्रण, प्रदूषण प्ररिहार जैसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय विषयों का समावेश किया जा सकता है।

3. **विद्यार्थी**

वर्तमान शैक्षिक विचार के अनुसार शिक्षा बाल केन्द्रित होनी चाहिए। विद्यार्थी के व्यक्तित्व के विकास के लिए पाठ्य वस्तु आधार का काम करती है। अत: पाठ्य वस्तु विद्यार्थी की आवश्यकताओं, रुचि, मानसिक परिपक्वता विभिन्न बौद्धिक स्तर के अनुरूप होनी चाहिए। विद्यार्थी के लिए हिन्दी भाषा शिक्षण की पुस्तक साधन के साथ साध्य भी है, अत: साध्य के रूप में पाठ्य पुस्तक शिक्षार्थी के भाषा ज्ञान को पुष्ट एवं परिपूर्ण करने वाली होनी चाहिए।

4. **भाषिक कौशल**

हिन्दी भाषा शिक्षण की पाठ्य पुस्तकों की पाठ्य सामग्री भाषिक कौशलों का विकास करने वाली होनी चाहिये। पाठय पुस्तक नवीन शब्द संरचनाओं, शब्द कोष विस्तार, मुहावरे, लोकोक्तियों, शब्द युग्म आदि के माध्यम से शिक्षार्थी में भाषिक कौशलों को विकसित करने में सक्षम होनी चाहिए।

5. **समयानुरूप पाठ्य सामग्री संयोजन**

पाठ्य वस्तु की उत्कृष्टता के साथ-साथ इसका संयोजन संतुलित होना आवश्यक है। भाषिक योग्यताओं के विकास के लक्ष्य को पूर्ण करने वाली शैक्षणिक सामग्री का पाठ्यक्रम के लिये निर्धारित समय के साथ संतुलन आवश्यक है, ताकि शिक्षण काल में प्रत्येक पाठ के साथ समान व्यवहार हो एवं सभी पाठों का ज्ञान एवं रसास्वादन हो सके।

6. **अन्य विषयों की पुस्तकों से सह-सम्बन्ध**

चूँकि मातृभाषा शिक्षा का माध्यम है, अत: अन्य विषयों के साथ सह सम्बन्ध के अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए किन्तु अन्य विषयों की पुस्तकों के पाठों - ज्ञान, विवरण आदि की आवृत्ति भाषा शिक्षण की पाठ्य पुस्तकों में नहीं होनी चाहिए। इस से विषय की पुनरावृत्ति के कारण पाठ्य पुस्तक उबाने वाली प्रतीत होगी।

4.3.4 पाठ्य सामग्री का प्रस्तुतीकरण

प्रस्तुतीकरण में निम्न बिन्दुओं पर विचार करना आवश्यक है :-

1. पाठ्य सामग्री
2. पाठ का शीर्षक
3. पाठ की प्रस्तावना अथवा भूमिका (शिक्षकों व विद्यार्थियों के प्रति)

4. रचनाकार का परिचय
5. शब्दकोश, व्याख्या, टिप्पणी, अन्त:कथाएँ, सन्दर्भ
6. अभ्यास

1. विषय सामग्री

विषय सामग्री के कतिपय गुणों एवं अनिवार्यताओं की चर्चा हम इसी इकाई में संक्षेप में कर चुके है। उन बिन्दुओं को ध्यान में रखकर पुस्तक निर्माण के समय पाठ की अनिवार्यताओं पर हम ध्यान देंगे। हम यह जान चुके हैं कि पाठ के प्रस्तुतीकरण में प्रत्येक साहित्यिक विधा एवं शैलीगत विविधता के आधार पर प्रतिष्ठित लेखकों की रचनाओं का संकलन किया जाता है। अत: यह निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना पाठ्य पुस्तक लेखक का कर्तव्य होता है :-

- पाठ के विषय की भूमिका रुचिकर हो।
- भावों में सुसम्बद्धता एवं क्रमबद्धता हो।
- वर्णन का प्रत्येक बिन्दु, कथा के घटनाचक्र का प्रत्येक मोड़ तथा नाटक का प्रत्येक अंश परस्पर सम्बद्ध हों एवं उनका उत्तरोत्तर विकास हो।
- उपसंहार स्पष्ट एवं सारगर्भित हो तथा जीवन मूल्यों के सन्दर्भ में प्रभावशाली संदेश से युक्त हो।
- पाठ का विस्तार तथा लम्बाई शैली के अनुरूप हो।

पाठ्य पुस्तक निर्माण के अवसर पर इन बिन्दुओं का ध्यान रखने से पाठ अपने आप अर्थपूर्ण हो जाता है।

2. शीर्षक

पाठ का शीर्षक उत्कंठा जागृत करने वाला, अर्थपूर्ण एवं पाठ्य वस्तु की आत्मा से सम्बन्धित होना चाहिये। शीर्षक पाठ्य वस्तु के प्रति पाठक की रुचि को बढ़ा देता है। मुंशी प्रेमचन्द की कहानियाँ "नमक का दरोगा", "दो बैलों की कथा", माखन लाल चतुर्वेदी की प्रसिद्ध कविता "पुष्प की अभिलाषा" अर्थपूर्ण शीर्षक हैं। पाठ के निर्माण का यह महत्वपूर्ण अंश है, क्योंकि सम्पूर्ण पाठ की पाठ्य वस्तु शीर्षक को केन्द्र बिन्दु बनाकर निर्मित होती है।

3. पाठ की भूमिका (प्रस्तावना)

पाठ की भूमिका विशेष रूप से पाठ का पूर्व परिचय होता है। इसके अन्तर्गत पाठ का उद्देश्य, उसकी विशेषतायें, शिक्षकों के प्रति निर्देश एवं विद्यार्थियों के प्रति संकेत होते हैं। यह पाठ के प्रति शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों की पूर्व मानसिकता का उपयोग करते हुए नए पाठ को पढ़ने की उत्सुकता पैदा करती है। अत: यह आवश्यक है कि भूमिका रुचिकर एवं पाठ को प्रति उत्कंठा उत्पन्न करने वाली हो ताकि पाठ जिससे शिक्षार्थी में स्वयमेव पढ़ने की इच्छा जागृत हो जाए।

4. रचनाकार का सामान्य परिचय (माध्यमिक स्तर के लिए)

पाठ की भूमिका का दूसरा अंश रचनाकार का सामान्य परिचय होना चाहिए। यदि शिक्षार्थियों ने इस पाठ के रचनाकार की कोई भी अन्य कृति पूर्व कक्षा अथवा अन्यत्र पढ़ी है, तो इस पाठ के प्रति उनकी अधिक रुचि जागृत हो जायेगी, रचनाकार के प्रति ज्ञान में वृद्धि होगी, उसकी पिछली रचना से तुलना की जा सकेगी। यदि रचनाकार का चित्र भी पाठय पुस्तक में उचित स्थान पर जोड़ दिया जाए तो उसे देखकर छात्रों में रचनाकार के प्रति एक आत्मीयता उत्पन्न होगी। साहित्यिक अभिवृत्ति जागरण हेतु यह प्रयास उत्तम है।

5. शब्दकोश, व्याख्या, टिप्पणी, अंत:कथाएँ तथा सन्दर्भ

ये सब बिन्दु विशेषत: छात्र की सहायता के लिये हैं। विशिष्ट, कठिन, नवीन शब्दों का सन्दर्भगत एवं प्रसंगगत अर्थ पाठ के अन्त में अथवा अंक चिन्हित कर पाद-टिप्पणी की तरह भी दिया जा सकता है। इसी प्रकार व्याख्या, विशिष्ट टिप्पणी, अंत:कथाएँ, सन्दर्भ आदि भी पाठ के अन्त में अथवा पाद-टिप्पणी के रूप में दिए जा सकते हैं। इससे विद्यार्थी को सहायता मिलती ही है, पाठ सरल भी बन जाता है।

4.3.5 अभ्यास

उपर्युक्त बिन्दुओं पर विचार कर लेने के पश्चात् आवश्यक है कि हम अभ्यास की ओर भी ध्यान दें, क्योंकि अभ्यास का भाषा शिक्षण की पुस्तक में विशेष महत्व है। अभ्यास पाठ्य सामग्री की प्रकृति के अनुरूप, शैक्षणिक उद्देश्यों की पूर्ति करने वाला, विद्यार्थी के मानसिक विकास के अनुसार, सीखे गए ज्ञान-विज्ञान एवं भाषिक कार्य की पुष्टि करने वाला होना चाहिए। हम निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर देखेंगे कि अभ्यास कार्य पाठ्यवस्तु को सार्थक स्वरूप देने में कैसे सहायक हो सकता है।

1. सम्पूर्णता

अभ्यासों की रचना करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि सम्पूर्ण पाठ्य सामग्री के प्रमुख शिक्षण बिन्दुओं का प्रतिनिधित्व हो जाये। इसके साथ ही भाषिक तत्वों के ज्ञान की जाँच करने वाले अभ्यास भी आवश्यक हैं।

पाठ्यवस्तु के मूल बिन्दुओं से इतर या थोड़ा हटकर शिक्षार्थी में योग्यता विकास पर भी ध्यान दिया जाना चाहिये ताकि छात्र के सामान्य भाषिक एवं साहित्यिक ज्ञानवर्धन को दिशा प्राप्त हो।

2. शैक्षणिक उद्देश्यों की पूर्ति

अभ्यासों की रचना शैक्षणिक उद्देश्यों की पूर्ति को ध्यान में रख कर करनी चाहिए, ये ज्ञान, बोध, अभिव्यक्ति एवं अभिवृत्ति विकास की पूर्ति में सहायक हों। साथ ही अभ्यास, बालक में व्यवहारगत परिवर्तन, ज्ञान-विकास, कौशलों का विकास, समीक्षा-शक्ति का विकास तथा रसास्वादन-प्रवृत्ति आदि सभी बिन्दुओं की जाँच करने वाले होने चाहिये।

3. अभ्यासों की विविधता

भाषा की पाठ्य पुस्तकों में प्राय: अभ्यासों में विषयगत निबन्धात्मक प्रश्न ही पूछे जाते हैं, इससे शिक्षार्थी एक ओर भाषिक तत्वों के अभ्यास से वंचित रह जाता है और दूसरी ओर उसके लिए यह रुचिविहीन क्रिया हो जाती है। अत: अभ्यास कार्य के अन्तर्गत विविध प्रकार के कार्य दिए जाने चाहिए जिनमें मौखिक, लिखित एवं क्रियात्मक कार्य को एक निश्चित अनुपात में स्थान देना चाहिए। विविध प्रकार के प्रश्नों यथा निबन्धात्मक, लघु उत्तरीय, तथा वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का यथोचित समावेश करना आवश्यक है, इससे शिक्षार्थी के बोध व अभिव्यक्ति की भली-भाँति जाँच हो सकती है। इन प्रश्नों में लिखित एवं मौखिक अभिव्यक्ति के प्रश्न अवश्य होने चाहिये।

4. अभ्यासों का स्वरूप या प्रकृति

अभ्यासों में निम्नलिखित प्रकार के प्रश्नों को स्थान दिया जा सकता है जिन से जहाँ एक ओर शिक्षार्थी को पठित विषय वस्तु एवं भाषिक तत्वों को निश्चित प्रकार से समझने, उनकी आवृत्ति करने, पाप्त ज्ञान को विकसित करने एवं सार संक्षेप को समझने में सहायता मिलती है वहीं दूसरी ओर उनके ज्ञान में न्यूनता को पहचानने तथा उसे पूरा करने का अवसर प्राप्त होता है।

i) आवृत्ति के प्रश्न

इन प्रश्नों के द्वारा पाठ के अन्तर्गत पठित सामग्री की आवृत्ति, प्रत्यास्मरण एवं अभिव्यक्ति के लिये अवसर उपलब्ध कराया जाता है।

ii) विकासात्मक प्रश्न

पठित सामग्री के अंतर्गत तुलना, विश्लेषण, विस्तार एवं सम्बन्धित योग्यता के लिये ये प्रश्न उपयुक्त होते हैं। इनमें पाठ मे पढ़े विषयों से थोड़ा आगे बढ़ कर शिक्षार्थी को सोचने तथा ज्ञानार्जन का अवसर दिया जाता है।

iii) निष्कर्ष के प्रश्न

इन प्रश्नों में पठित सामगी का मूल-भाव, विचार, प्रेरणा, जीवन मूल्य तथा विशेष सन्देश का विषय निबद्ध किया जाता है

iv) **निदानात्मक/उपचारात्मक प्रश्न**

इस प्रकार के प्रश्नों में शिक्षार्थी के ज्ञान की जाँच अथवा उस की कमजोरी की जाँच की जाती है, जिससे उसके ज्ञान की कमजोरी जान कर उसे दूर किया जा सके।

प्रथम दो प्रकार के प्रश्नों की रचना के लिये आवश्यक है कि वे छात्र की मानसिक परिपक्वता एवं ग्राह्यता के लक्ष्य को पूर्ण करने वाले हों। ये संख्या में आवृत्ति एवं निदान के प्रश्नों से कम हो सकते हैं।

5. प्रश्न की युक्तियाँ

हम पिछले बिन्दु में देख चुके हैं कि प्रश्न विविध प्रकार की अभिव्यक्तियों के लिये हों - यथा लिखित , मौखिक एवं क्रियात्मक।

मौखिक अभिव्यक्ति	-	लघु उत्तरात्मक प्रश्न
	-	भाषिक कौशल के प्रश्न
	-	प्रत्युत्पन्नमति के प्रश्न (तत्काल विचार करके उत्तर दे सकें)
लिखित अभिव्यक्ति	-	निबन्धात्मक प्रश्न
	-	लघु उत्तर प्रश्न
	-	वस्तुनिष्ठ प्रश्न
क्रियात्मक प्रश्न	-	समीक्षात्मक प्रश्न, भाषिक कौशल की जाँच के प्रश्न
		बालक को किसी क्रिया में प्रवृत्त करने वाले प्रश्न

6. शिक्षार्थी

अभ्यासें के प्रश्नों की रचना में शिक्षार्थी की मानसिक परिपक्वता तथा भाषा योग्यता का ध्यान रखना आवश्यक है। अभ्यास, सरल एवं रोचक हों, बोझिल नहीं, पाठ्य-वस्तु के अनुरूप हों, समय का निर्धारण प्रत्येक अभ्यास के अनुरूप हो।

बोध प्रश्न

1 पाठ्य पुस्तक निर्माण के अध्ययन पक्ष की 5 विशेषताएँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2 पाठ्य पुस्तक के 5 गुणों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4.3.6 हिन्दी भाषा शिक्षण की पाठ्य पुस्तक का रूपात्मक पक्ष

इस भौतिक पक्ष एवं बाह्य स्वरूप के आधार पर हिन्दी भाषा शिक्षण की पुस्तक आकर्षक एवं ग्राह्य बन जाती है। आइए, पुस्तक के इस पक्ष पर निम्न बिन्दुओं के आधार पर विचार करें-

1. आकार

पुस्तक का आकार, प्ररचना, टंकन आदि का चुनाव शिक्षार्थी की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता तथा शिक्षण युक्ति के अनुसार किया जाना चाहिये। पुस्तक के बाह्य तथा अंदर दोनों ही में स्वरूप का आकर्षक होना समान रूप से महत्वपूर्ण है यद्यपि आजकल पुस्तकों के कई प्रकार के आकारों का प्रचलन है तथापि पुस्तक का आकार 8"x6" सरल एवं सहज है। इस प्रकार की पुस्तक बालक के लिए पढ़ने आदि के समय सभांलने में सुविधा होती है।

2. प्ररचना

पुस्तक की प्ररचना (डिजाइन) रंगीन, आकर्षक, पुस्तक का स्पष्ट नाम लिये होनी चाहिए। इसका पृष्ठ सन्तुलन विषय सामग्री के अनुरूप हो। पुस्तक के प्रथम मुख पृष्ठ, द्वितीय मुख पृष्ठ तथा चतुर्थ मुख पृष्ठ को इस प्रकार बनाया जाए जिस से शिक्षार्थी स्वत: उस की ओर आकृष्ट हो।

3. जिल्द

जिल्द टिकाऊ एवं सुंदर होनी चाहिए। पुस्तक को किसी भी अंश से खोलने पर उसके मुद्रित अंश जिल्द की सिलाई में दबे न हों तथा पुस्तक खोलने पर पूरी तरह खुलने वाली होनी चाहिए, ऐसा न हो कि पुस्तक खुली रखने के लिए शिक्षार्थी को प्रयासरत रहना पड़े तथा तनिक सी ढील होने पर पुस्तक झट बंद हो जाए।

4. मुख पृष्ठ

मुख पृष्ठ आकर्षक, रंगीन एवं मनोरम होना चाहिये। मुख पृष्ठ पर पुस्तक का नाम, किस कक्षा के लिए निर्धारित है, सम्पादक अथवा लेखक का नाम, प्रकाशक का नाम, प्रकाशन वर्ष, मूल्य आदि का उल्लेख होना चाहिए।

5. कागज़

पुस्तक में प्रयुक्त कागज़ का इतना मोटा होना आवश्यक है कि मुद्रण स्पष्ट दिखाई दे, किन्तु पिछले पृष्ठ पर उसका कोई भी निशान झलकने वाला नहीं होना चाहिए। पाठ्य पुस्तक में घटिया स्तर का कागज़ प्रयोग करने से पिछले पृष्ठ के अक्षरों का प्रभाव अथवा दबाव अगले पृष्ठ पर दिखाई देता है इससे पठनीय अंश दुरूह हो जाता है, असुन्दर लगता है तथा शिक्षार्थी में पढ़ने की रुचि को घटाता है। पुस्तक का कागज़ टिकाऊ हो तथा सफेद हो। कागज़ में इतनी चमक न हो कि शिक्षार्थी की नेत्र-ज्योति को प्रभावित करे।

6. टाइप

पुस्तक के मुद्रण में प्रयुक्त टाईप स्पष्ट रूप से पठनीय, सुगम एवं सुडौल होना चाहिए। उत्तम स्याही का प्रयोग होना चाहिए। अस्पष्ट तथा त्रुटिपूर्ण टाइप विषय सामग्री की गम्भीरता को नष्ट कर देता है। अक्षर सन्तुलित हों, अक्षरों व शब्दों के मध्य उचित दूरी हो, वाक्यों के विराम चिह्नों की उपयुक्तता (ताकि अर्थ का अनर्थ न हो) टाइप पर ही आधारित होती है। इसी से शिक्षार्थी की रुचि पुस्तक के पठन में बनी रहती है और उसके भाषिक एवं साहित्यिक कौशलों का विकास हो पाता है।

7. मुद्रण

पहले भी आप जान चुके हैं कि मुद्रण स्पष्ट और सुन्दर हो। यह पुस्तक को आर्कषक बना देता है। काला सफेद व रंगीन दोनों प्रकार का मुद्रण उपयुक्त है, किन्तु आर्कषक व स्पष्टता उसकी अनिवार्यता है। चित्रों का मुद्रण भी स्पष्ट होना चाहिए।

8. मूल्य

हिन्दी भाषा शिक्षण की पुस्तक अनिवार्य विषय के अन्तर्गत है। अत: इसका मूल्य अधिक नहीं होना चाहिए। पुस्तक का मूल्य इतना रखा जाए कि भारत के मध्यवर्गीय माता-पिता की क्रय क्षमता के अनुरूप हो। इसकी अधिक कीमत विषय के प्रति रुचि का हनन भी करती है। सामान्य कीमत से भाषा अध्ययन के प्रति मोह, प्रेम, रुचि के विकास की संभावना भी है।

4.3.7 सहायक पुस्तकों का निर्माण

पाठ्य पुस्तकों के अध्ययन में सहायक पुस्तकों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। सहायक पुस्तकें शिक्षार्थी की अध्ययन रुचि को विकसित करती हैं तथा उसे पाठ्य पुस्तक के गम्भीर अध्ययन के लिए मानसिक रूप से तैयार करती हैं। विशेषत: माध्यमिक एवं वरिष्ठ माध्यमिक कक्षाओं में सहायक पुस्तकें बहुत लाभप्रद होती हैं। सहायक पुस्तकों के निर्माण में निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिये :

1. सहायक पुस्तकों के विषय

सहायक पुस्तकों के विषय छात्रों की बोध शक्ति के अनुकूल हों। छात्र इनमें रुचि ले सकें। सहायक पुस्तकें छात्रों को विशेष सन्देश देने वाली, उन्हें नैतिक विकास में सहायता देने वाली एवं सामान्य ज्ञान का विकास करने वाली होनी चाहिएँ। इन का विषय पाठ्य पुस्तक में लिए गए विषय से तुलनात्मक दृष्टि से सरल तथा स्वयं बोधगम्य होना चाहिए। इसमें जहां एक ओर नवीनता अपेक्षित है वहीं दूसरी ओर पाठ्य पुस्तक में लिए गए विषयों को स्पष्ट रूप से समझने में सहायता करने वाली सामग्री का समावेश भी किया जाना चाहिए।

2. भाषा

सहायक पुस्तकों की भाषा अपेक्षाकृत सरल होनी चाहिए। सामान्य बोलचाल की भाषा से इनका स्तर ऊंचा हो किंतु दुरूह भाषा युक्त नहीं होनी चाहिए। इन पुस्तकों से भाषायी कौशल के विकास की अपेक्षा अर्थपूर्ण सामग्री प्रदान करने पर बल देना चाहिए। वाक्य योजना सरल हो। अनुच्छेद छोटे हों, छात्र की भाषायी योग्यता व सामान्य ज्ञान का विस्तार करने वाले हों।

3. दिशा निर्देश

सहायक पुस्तकों से अग्रिम अध्ययन की दिशा भर मिलनी चाहिए, ताकि बालक अधिक पढ़ने के लिए प्रेरित हों। बालक में पठन रुचि जागृत करने वाली भी होनी चाहिये।

4. विविधता

सहायक पुस्तकें पाठ्य पुस्तकों की सहगामी हों, तो अति उत्तम है। लेखक, कवि, रचनाकार का परिचय, रचना संबधी समीक्षा, नैतिक शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान, कथा, कहानी आदि सहायक पुस्तकों में रखे जाने चाहिये।

बोध प्रश्न

3. पाठ्य पुस्तक के रूपात्मक पक्ष की पाँच विशेषताएँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4. पाठ्य पुस्तक एवं सहायक पुस्तक में अन्तर स्पष्ट करिए। चार पंक्तियों में उत्तर लिखें

.....

.....

.....

.....

4.4 हिन्दी शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रयोग

अब हम विचार करेंगे कि हिन्दी भाषा शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सामग्री का प्रयोग किस प्रकार शिक्षण को रुचिकर, सरल एवं उद्देश्यपूर्ण बनाने में सहायक हो सकता है। हम इनका वर्गीकरण करते हुए इनके प्रकारों की ओर ध्यान देंगे:-

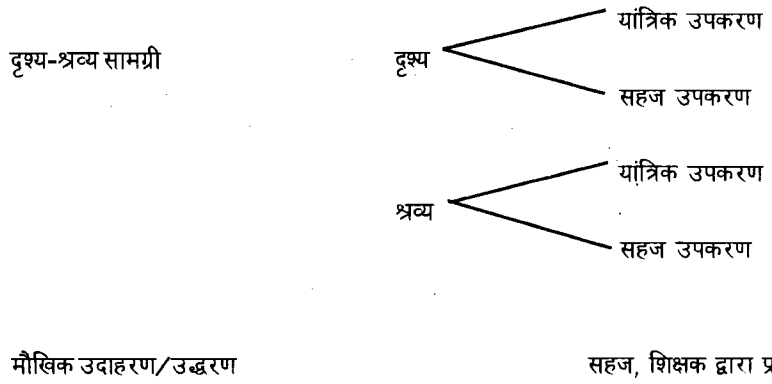

दृश्य एवं श्रव्य दोनों प्रकार की सामग्रियाँ दो वर्गों में वर्गीकृत की जा सकती हैं। कुछ सामग्रियाँ यंत्रों के माध्यम से ही चलती हैं। कुछ को सहज संज्ञा दी गयी है, क्योंकि ये सरलता से किन्हीं उपकरणों के बिना सामान्य रूप में तैयार की जा सकती हैं। साक्ष्य एकत्रित किये जा सकते हैं। इस प्रकार सरलता से निर्मित व प्रस्तुत वस्तुओं को आप सहज दृश्य, श्रव्य उपकरण की संज्ञा दे सकते हैं। हम इनका पृथक पृथक अध्ययन करेंगे।

4.4.1 यांत्रिक दृश्य उपकरण

इनके द्वारा सहायक सामग्री को दृश्य रूप से शिक्षार्थियों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। इनमें से कुछ की संरचना अति सरल होती है जैसे मैजिक लैंटर्न। इन्हें आप स्वयं भी तैयार कर सकते हैं जबकि कुछ की संरचना अति जटिल होती है तथा उनके संचालन की प्रक्रिया सीखने के लिए विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है जैसे प्रोजेक्टर, कम्प्यूटर आदि। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है।

1. प्रोजेक्टर

यह एक बिजली चलित यंत्र है, जिसमें पहले से ही निर्मित स्लाइड अथवा फिल्म लगाकर दिखायी जा सकती है। स्लाइड को आप सामान्य रूप में देखकर समझ नहीं सकते, किन्तु जब प्रोजेक्टर में स्लाइड लगाकर, अथवा फिल्म की स्ट्रिप लगा कर पर्दे पर दिखायी जाती है, तो दृश्य काफी बड़ा दिखाई देता है। स्लाईड को आवश्यकता अनुसार काफी समय तक दिखा सकते हैं। हिन्दी भाषा शिक्षण में रचनाकार का जीवन परिचय, साहित्यिक कृतियाँ आदि पर स्लाइड बना सकते हैं। किसी स्थान विशेष के वर्णन पर स्थान का चित्र आदि भी प्रभावशाली ढंग से दिखाया जा सकता है। प्रोजेक्टर में चलित फिल्म भी दिखाई जाती है। इसकी प्रदर्शन प्रक्रिया स्लाईड से सर्वथा भिन्न होती है। फिल्म लगाकर बिजली से स्वचलित पद्धति से फिल्म दिखा सकते हैं। किसी नाटक, कहानी का फिल्मांकन भी इसके माध्यम से हो सकता है। यदि इसमें ध्वनि रिकार्ड नहीं की गई है तो यह मूक फिल्म है, शिक्षक स्वंय इसका वर्णन कर सकते हैं। इसका प्रभाव शिक्षार्थी के मस्तिष्क पर दीर्घकाल तक एवं चिरस्थायी भी रह सकता है।

2. ओवर हेड प्रोजेक्टर

इस प्रोजेक्टर का प्रयोग लिखकर दिखाने, चित्र बना कर दिखाने या पारदर्शी कागज़ पर पूर्व निर्मित पाठ- प्रक्रिया, सार, चित्रांकन प्रस्तुत किये जा सकते हैं। कुछ सीमा तक यह श्यामपट्ट के कार्य की पूर्ति भी कर देता है। पारदर्शी कागज़ पर लिखित सामग्री काँच के नीचे लगे बल्ब से शिक्षक के पीछे, ऊंचाई पर प्रदर्शित (प्रोजेक्ट) हो जाती है। चूँकि पारदर्शी कागज़ सामने ही होता है अत: शिक्षक को मुड़ कर देखना नहीं पड़ता एवं वह पारदर्शी कागज़ को देखकर विषय को स्पष्ट करता चलता है। कक्षा की ओर शिक्षक की पीठ नहीं होती, इसलिए यह लाभदायक है।

3. मैजिक लैंटर्न

यह एक प्राचीन किन्तु प्रभावी उपकरण है। इसके द्वारा भी किसी स्लाइड अथवा पारदर्शक पर बनी आकृति को सामने रखे परदे पर प्रदर्शित किया जाता है। प्रोजेक्टर के आ जाने से अब इसका प्रयोग प्राय: समाप्त ही हो गया है। फिर भी जहां प्रोजेक्टर उपलब्ध नहीं हो वहाँ शिक्षक इसका प्रयोग प्रभावी ढंग से कर सकते हैं। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसकी संरचना बड़ी सरल है तथा इसे स्वयं बनाया जा सकता है।

4. कम्प्यूटर

कम्प्यूटर आधुनिक समय का सर्वाधिक प्रचलित उपकरण है, जिसके बारे में अब आप सब जानते हैं। यह बिजली से चलने वाला बहुआयामी यन्त्र है। इसमें आप लिखित एवं दृश्यात्मक चित्र, आरेख आदि से ज्ञानवर्धन कर सकते हैं। पूरा पाठ इसमें संकेतों सहित उपलब्ध हो जाता है। छात्र स्वयं इसका प्रयोग सीखकर लाभ उठा सकते हैं। एक बार का तैयार पाठ फ्लॉफी (संग्रहीत पाठ) के अंतर्गत चिरकाल के लिए संग्रहीत हो सकता है। इसके संचालन का प्रशिक्षण प्राप्त कर शिक्षक इसका स्वयं प्रयोग कर सकता है तथा शिक्षार्थियों को सिखा सकता है। कम्पयूटर के विकास की अनन्त संभावनाएं हैं।

5. चित्र विस्तारक (एपी-डायस्कोप)

चित्र विस्तारक दो प्रकार की क्रियाएँ संपादित करता है। एपी का अर्थ है धरातल एवं डाय का अर्थ है मध्य। इस यंत्र के माध्यम से मुद्रित सामग्री पुस्तक आदि को इस यन्त्र के धरातल पर रख कर बड़ा कर के दिखाया जा सकता है। तथा पूर्व-निर्मित स्लाइर्ड को यन्त्र के मध्य में बने निर्धारित स्थान पर लगा कर दिखाया जा सकता है। इस यन्त्र में यद्यपि ये दोनों व्यवस्थाएं उपलब्ध हैं परन्तु एक समय में एक प्रकार की व्यवस्था का ही उपयोग किया जा सकता है। इससे छोटे चित्र को काफी बड़ा करके दिखाया जा सकता है। इसके द्वारा पुस्तक के चित्र भी चार्ट आकार में बड़े दिखाये जा सकते हैं। चित्र को चार्ट के आकार में प्रस्तुत कर सकते हैं।

4.4.2 सहज दृश्य साधन

इसके अंतर्गत हम सरलता से निर्मित दृश्य साधनों की जानकारी प्राप्त करेंगे।

1. चार्ट

चार्ट द्वारा साहित्य का काल विभाजन, व्याकरण के शब्द-भेद, प्रक्रिया आदि का दृश्य माध्यम से ज्ञान दे सकते हैं। चार्ट में चित्रों एवं तथ्यों को अलग-अलग अथवा एक साथ प्रस्तुत कर सकते हैं।

2. चित्र

पाठ को आकर्षक एवं रोचक बनाते हैं। रेखाओं व रंगों के माध्यम से तथ्यों एवं भावों को आकृति प्रदान की जा सकती है। चित्रों के उपयोग से छात्रों में पाठ के प्रति रुचि जागृति, भाव एवं सौन्दर्य की अभिव्यक्ति, तथा विषय की स्पष्टता के उद्देश्यों की पूर्ति होती है।

3. पोस्टर

यह विज्ञापन शैली से किसी भाव अथवा क्रिया को रंगीन आकर्षक रूप से प्रस्तुत करने का माध्यम है। यह शीघ्रता से संदेश प्रस्तुत करता है, आकृति एवं रंग द्वारा अध्यापित बिन्दु को दर्शाकर कार्य की दिशा निश्चित कर देता है। कक्ष सज्जा हेतु, दीर्घ, प्रभावी सन्देश या सूचना हेतु इनका प्रयोग अधिक लाभप्रद है।

4. मानचित्र और ग्लोब

इनका प्रयोग भूगोल, इतिहास आदि विषयों के लिए अधिक उपयुक्त है, किन्तु भाषा शिक्षण के पाठों में प्रस्तुत भौगोलिक एवं ऐतिहासिक जानकारी हेतु इनका प्रयोग आवश्यक हो जाता है। राष्ट्र व विश्व के नक्शे में स्थान दर्शाने के लिए यह उपयोगी हैं। हिन्दी भाषा के व्यवहार के क्षेत्रों, अन्य भाषाओं के क्षेत्रों तथा दोनों के क्षेत्रों को दिखाने के लिए मानचित्र एवं ग्लोब प्रभावपूर्ण दृश्य साधन हैं।

5. रेखाचित्र

इनका प्रयोग श्यामपट्ट पर तत्काल किया जा सकता है। यदि शिक्षक को रेखाचित्र बनाने का अभ्यास है तो दृश्य सामग्री का यह प्रकार बहुत प्रभावी होता है। रेखाचित्रों के माध्यम से विषय की दुरूहता को कम भी कर सकते हैं। वर्गीकरण, विभाजन आदि क्रियाएँ, प्रकार विभिन्नतायें आदि रेखाचित्रों के माध्यम से प्रस्तुत की जा सकती हैं। कई शब्दों के अर्थ यथा "षटकोण" रेखाचित्र से सहज में ही समझाये जा सकते हैं।

6. खादी बोर्ड या फलैनल बोर्ड

यह वस्तुत: दृश्य सामग्री को प्रस्तुत करने वाला एक साधन है। इसे एक लकड़ी के फ्रेम पर चारों ओर से कपड़े को कस कर किसी भी आकार का बना सकते हैं। इस पर विभिन्न चित्र, आकृति, कहानी का घटनाक्रम आदि कागज-काटों के पिछले हिस्से में रेगमार चिपका कर अथवा कपड़े के काट को खादी एवं फलैनल के ही काट द्वारा खादी बोर्ड या फलैनल बोर्ड पर चिपका कर विषय को स्पष्ट किया जाता है।

7. श्यामपट्ट

दृश्य साधनों में अति आवश्यक तथा अनिवार्य, सहज उपलब्ध या निर्मित उपकरण है, श्यामपट्ट। यह शिक्षक के लिये सर्वाधिक सहायक उपकरण है जिस पर नवीन विचार, अन्वेषण, तथ्य, प्रक्रिया, चित्रांकन सभी को प्रस्तुत किया जा सकता है। कक्षा में श्यामपट्ट की व्यवस्था सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। यह सर्वप्रथम दृश्य उपकरण है। निबन्ध की रूपरेखा, व्याकरण के उदाहरण, परिभाषाएँ, शब्द-वर्तनी, रेखाचित्र आदि को श्यामपट्ट पर प्रस्तुत कर देने से पाठ रोचक बन जाता है। शिक्षक के लिए यह सर्वसुलभ एवं आवश्यक उपकरण है। श्यामपट्ट को शिक्षक का परम मित्र कहा जाता हैं। यद्यपि परम्परा से श्यामपट्ट काले रंग के होते हैं परन्तु आज कल सफेद, हरे, नीले आदि रंगों के पट्टों का भी प्रचलन होने लगा है तथा इन पर विविध रंगों के चाकों से लिखा ज़ाता है।

4.4.3 यांत्रिक श्रव्य उपकरण

हम अब विचार करेंगे कि श्रव्य उपकरणों में भी कितने प्रकार के यांत्रिक उपकरण हैं :-

1. आकाशवाणी (रेडियो)

इस उपकरण से आप सभी परिचित हैं। आकाशवाणी कार्यक्रम की सूची से आप हिंदी भाषा एवं साहित्य के कार्यक्रमों एवं शिक्षण कार्यक्रमों के प्रसारण दिनांक एवं समय के विषय में जान सकते हैं। भाषा-विशेषज्ञों के प्रसारित व्याख्यान साहित्यिक परिचर्चा, भाषा कक्षायें, नाटक, कहानी आदि कक्षा शिक्षण एवं भाषा ज्ञान वृद्धि के लिए अत्यन्त लाभप्रद हैं।

2. टेपरिकार्डर

यह भी अत्यन्त प्रचलित उपकरण है। रेडियो के नाटक, कहानी, वार्ता या किसी भी भाषायी ज्ञान सम्बन्धी कार्यक्रम को आप टेप कर कक्षा में शिक्षण से सम्बन्धित करतें हुए सुना सकते हैं। यह रेडियो से भी अधिक लाभदायक साधन है। बालकों के उच्चारण में सुधार भी इसके द्वारा संभव है। एक ही उपकरण में दोनों का लाभ उठाने के लिए "एक में दो" भी अत्यन्त प्रचलित है इससे आकाशवाणी तथा टेपरिकार्डर दोनों का लाभ प्राप्त हो सकता है। इसमें शिक्षार्थियों की ध्वनि अंकित कर उनमें शुद्ध उच्चारण के लिए प्रतियोगिता की भावना उत्पन्न की जा सकती है।

3. लिंग्वा फोन एवं ग्रामोफोन

ग्रामोफोन के तैयार रिकार्डों का उपयोग भाषा शिक्षण में बहुत हितकर होता है। वस्तुत: ग्रामोफोन को जब हम भाषा शिक्षण के लिए उपयोग करते हैं तब उसे लिंग्वा फोन कहा जाता है। भाषा सीखने, सुधार करने तथा कहानी, कविता, संवाद, सस्वर वाचन, शब्द उच्चारण, भाषा की शैलियाँ एवं समालोचना सम्बन्धी पाठों के रिकार्ड अत्यन्त प्रचलित हैं। भाषा प्रयोगशाला (लेंग्वेजलैब) में ये बहुत लाभप्रद सिद्ध होते हैं। बाजार में रिकार्डों की उपलब्धि से यह साधन प्रत्येक के लिए व्यक्तिगत रूप से भी लाभप्रद हो सकता है। छात्र का भाषायी कौशल इसके माध्यम से बढ़ाया जा सकता है। टेपरिकार्डर के बहु प्रयोग से इसका प्रभाव कम हो गया है।

4.4.4 श्रव्य के सहज साधन

श्रव्य के सहज साधन किसी प्रकार बना कर रखे नहीं जा सकते, किन्तु यथा अवसर इनका प्रयोग किया जा सकता है। कुछ ध्वन्यात्मक शब्दों - "फुसफुसाहट", "कूक", "चीख", "धमक" आदि को तत्काल शिक्षक द्वारा अथवा अन्य छात्रों की सहायता से प्रस्तुत कर सकते हैं।

4.4.5 दृश्य-श्रव्य यान्त्रिक उपकरण

1. चलचित्र

वर्तमान समय में चलचित्र केवल मनोरंजन के ही नहीं वरन् शिक्षा के प्रभावी साधन के रूप में विकसित हो रहे हैं। साहित्यकार की जीवनी, कृतियाँ, किसी विशेष साहित्यिक रचना का चल चित्रांकन (फिल्मांकन) मूल अवधारणा को समझने, प्रतिक्रिया करने, चरित्र चित्रण करने, समालोचन करने के लिए उपयुक्त साधन है। साहित्यिक रचना पर उत्तम स्तर की बनी फिल्म को संग्रहीत करके भी रखा जा सकता है। लघु चलचित्र भी इस क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं।

2. दूरदर्शन

चलचित्रों को भी अत्यन्त छोटे उपकरण में प्रस्तुत करने की क्षमता रखने वाला यह उपकरण सर्वाधिक लोकप्रिय है। विभिन्न समय पर विभिन्न विषयों पर शैक्षिक पाठों का प्रसारण कर यह उपकरण बालक के लिए घर में भी शिक्षा उपलब्ध करा देता है। इसके विद्यालयीय कार्यक्रम विद्यालय समय के साथ समायोजित कर प्रस्तुत किये जा सकते हैं। दूरदर्शन के अनेकों चैनल के प्रारम्भ हो जाने के कारण यह सुविधा और सरल रूप से प्राप्त है। जिस प्रकार संगीत तथा खेल चैनल कार्य कर रहे हैं वैसे ही शिक्षा चैनल भी शुरू किया जा सकता है जिसमें भाषा शिक्षण का समय भी रखा जा सकता है। आज कल कुछ चैनलों ने इस दिशा में प्रयोग प्रारम्भ कर दिए हैं। डिस्कवरी चैनल का प्रयास विशेष रूप से स्तुत्य है। दूरस्थ शिक्षा के लिए तो दूरदर्शन एक समर्थ साधन है।

4.4.6 दृश्य-श्रव्य के सहज साधन

ये साधन अन्य सहज दृश्य एवं श्रव्य साधनों की तरह से सरलता से आयोजित किये जा सकते हैं।

1. नाटक एवं अभिनय

किसी नाटककार का नाटक, एकांकी मंच पर खेल कर एवं मंचित होता देखकर सहज बोध एवं अनुभव प्राप्त होता है। इससे सौन्दर्य बोध एवं भावानुभूति सार्थक होती है। नाटक अभिनीत होता देखने तथा, पात्रों द्वारा संवादों की अभिनयपूर्ण प्रस्तुति से अभिनय करने वालों एवं दर्शकों, सभी को विशिष्ट ज्ञान प्राप्ति एवं आनंदानुभूति होती है।

इससे नाटक के रंगमंचीय गुणों की भी समालोचना की जा सकती है।

2. कविता पाठ

कवि द्वारा वाणी के उतार-चढ़ाव एवं भावाभिनय कविता के भावों को प्राण प्रदान करते हैं। प्रत्यक्ष रूप से इस प्रकार के आयोजन विशेष रूप से साहित्यिक अनुभूति एवं भाषायी अभिज्ञान दोनों दृष्टियों से लाभप्रद हैं।

3. परिभ्रमण

प्रकृति निरीक्षण, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थलों का परिभ्रमण छात्रों को भाषा व साहित्य के पाठों में उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इन पर सामूहिक विचार-विमर्श भी किया जा सकता है।

4.4.7 उदाहरण एवं साक्ष्य - दृश्य एवं मौखिक

1. दृश्य साक्ष्य

यह दृश्य उदाहरण अथवा वास्तविक पदार्थों का प्रदर्शन है। इनकी आवश्यकता प्राथमिक कक्षाओं में अधिक पड़ती है। राज चिह्न, झंडे, डाक-टिकट आदि वास्तविक रूप में दिखाकर उनका ज्ञान प्रदान किया जा सकता है। इसी प्रकार फल, फूल, पौधे आदि भी वास्तविक या दृश्य साक्ष्य के रूप में दिखाये जा सकते है। बहुमूल्य वस्तुएँ, रत्न, हीरे तथा जीवित प्राणी दृश्य साक्ष्य में दिखाना अनुचित है।

2. प्रतिरूप, प्रतिमूर्ति या नमूने

वैज्ञानिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक पाठों जैसे- ताजमहल, अशोक स्तम्भ, सॉची का स्तूप आदि से संबंधित भावनों एवं वस्तुओं के नमूने या प्रतिमूर्ति प्रस्तुत करना उपयोगी सिद्ध होता है। इन्हें शिक्षक स्वयं भी तैयार कर सकते हैं या बाजार से खरीद सकते हैं।

3. शाब्दिक एवं मौखिक उदाहरण

भाषा शिक्षण में इनका विशेष महत्व है। इनके अन्तर्गत शब्द चित्र, जो कठिन-भाव या विचार को सरल बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं, सम्मिलित हैं। प्रचलित रूपों का प्रयोग, अलंकारों के उदाहरण, कविताओं के भावों की पुष्टि के लिए समान भाव की कविताओं के दृष्टांत या उद्धरण भी मौखिक एवं शाब्दिक उदाहरण हैं।

प्रेरणाप्रद कहानी, अंत:कथा, सन्त-वचन आदि का उपयोग यथा समय, सरल, प्रेरणापूर्ण एवं शुद्ध उदाहरण के रूप में प्रयोग करना अभीष्ट होगा। बालक की रुचि इन उदाहरणों के माध्यम से बढ़ाई जानी चाहिये। भाषा शिक्षण में सूक्तियों, मुहावरों, लोकोक्तियों, अन्योक्तियों के लिए मौखिक उदाहरण उत्तम होते हैं।

4.5 हिन्दी शिक्षण में पाठ्य सहगामी क्रियाएँ एवं उनकी उपयोगिता

गद्य, पद्य, नाटक, एकांकी आदि विधाओं का शिक्षण कक्षा के भीतर तो किया ही जाता है। इनका उपयोग यदि सहगामी क्रियाओं के रूप में किया जाये तो ये रुचिकर, सरल एवं ग्राह्य बन जाते हैं।

4.5.1 उपयोगिता एवं महत्व

- भाषा शिक्षण में पाठ्य-सहगामी क्रियाओं से छात्रों में भाषायी एवं साहित्यिक रुचि का विकास होता है।
- उनकी भाषायी योग्यता एवं साहित्यिक रसानुभूति विकसित होती है।
- वास्तविक आनन्द की प्राप्ति होती है।
- कविता पाठ जैसी क्रियाओं से काव्य रचना की प्रेरणा भी मिलती है।

बोध प्रश्न

5. दृश्य श्रव्य सामग्री का वर्गीकरण आरेख द्वारा स्पष्ट करें।

6. आकाशवाणी एवं दूरदर्शन का हिन्दी शिक्षण में उपयोग कैसे किया जा सकता है। चार पंक्तियों में उत्तर दें।

.....

.....

.....

.....

4.5.2 पाठ्यचर्या सहगामी क्रियाएँ

कविता पाठ सम्बन्धी

1. कवि जयन्ती

सूर, तुलसी, दिनकर आदि कवियों की जयन्ती का आयोजन एवं उनकी कृतियों का पाठ करना।

2. काव्य गान

कविताओं को गाकर (मीरा, कबीर, सूर, तुलसी के पद) प्रस्तुत करने से कवितायें सरल बन जाती हैं।

3. कवि सम्मेलन

स्थानीय कवियों को आमंत्रित कर उनकी कविताओं का रसास्वादन किया जा सकता है। इसमें विद्यालय के छात्र एवं शिक्षक भी अपनी स्वरचित कविता का पाठ कर सकते हैं।

4. काव्य गोष्ठी एवं साहित्य गोष्ठी

कविता एवं साहित्यिक रचनाओं पर गोष्ठी का आयोजन कर विचार-विमर्श किया जा सकता है। बाह्य वक्ता को भी आमंत्रित किया जा सकता है।

5. कवि दरबार

कवि कदबार में छात्र-छात्राओं द्वारा प्रसिद्ध कवियों की कविताएं कंठस्थ कर अथवा लिखकर मंच पर पस्तुत की जाती हैं। शिक्षार्थी कवियों के तत्कालीन वेश भी पहन सकते हैं। छात्र-छात्राओं को कवियों की कृतियों का सस्वर पाठ करने से काव्य रसास्वादन, कविता पाठ की योग्यता एवं कविता कण्ठस्थ करने की प्रेरणा भी प्राप्त होती है।

6. समस्या पूर्ति

यह अत्यन्त प्राचीन प्रणाली है, इसके माध्यम से छात्र कविता करने में रुचि लेने लगते हैं। एक पंक्ति प्रस्तुत कर उसे पूर्ण करने के लिए कहा जा सकता है। कोई एक विषय या दो शब्द भी देकर पूर्ति के लिये प्रस्तुत कर सकते हैं।

7. अंत्याक्षरी

इसके अंतर्गत छात्रों को दो समूहों में विभाजित कर प्रत्येक समूहों द्वारा प्रस्तुत कविता के अन्तिम शब्द से प्रारम्भ कर कविता पाठ करना होता है। जो समूह कविता प्रस्तुत करने में असमर्थ रहता है उस की पराजय मानी जाती है।

8. प्रतियोगिताएँ

हिन्दी कविता, कहानी, नाटक, परिच्छेद लेखन की प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जाना चाहिये। इससे अधिकाधिक शिक्षार्थियों को इन क्रियाओं में भाग लेने की प्रेरणा एवं अवसर उपलब्ध होते हैं।

गद्य पाठ संबंधी सहगामी क्रियाएँ

1. अभिनय

इसका उल्लेख पहले भी किया जा चुका है। यह नाटक से संबंधित है। अत: नाटक के भिन्न-भिन्न पात्रों का आरोपण छात्रों में किया जाता है। इससे शिक्षार्थियों में अभिनय क्षमता के विकास के साथ भावानुसार स्वर के उचित आरोह-अवरोह के साथ शुद्ध उच्चारणपूर्वक संवाद बोलने की क्षमता आ जाती है।

2. संवाद रचना एवं संवाद कथन

दो या दो से अधिक छात्रों के मध्य प्रयोजनपूर्ण संवादों की संरचना, इनको वार्तालाप रूप में प्रस्तुत करना अत्यन्त रुचिकर एवं रचना की प्रेरणा देने वाली क्रिया है।

3. साहित्यिक / स्वारस्वत यात्राएँ

साहित्यिक स्थान भ्रमण का संक्षिप्त विवरण इसी इकाई में पहले किया जा चुका है। साहित्यिक स्थलों, संग्रहालयों, पुस्तकालयों, लेखक, कवि निवास आदि स्थलों पर भ्रमण के कार्यक्रमों द्वारा शिक्षर्थियों में भाषा शिक्षण से भावात्मक संबंध विकसित किए जा सकते हैं।

इस प्रकार आपने देखा कि हिन्दी शिक्षण में कक्षा शिक्षण के अतिरिक्त अनेकों क्रियाओं का आयोजन कर छात्रों में साहित्यिक अभिरुचि जागृत की जा सकती है एवं भाषायी योग्यता का विकास किया जा सकता है। यह उनके व्यक्तित्व के संवर्धन में भी सहायक है। इन सब का आयोजन हिन्दी भाषा के शिक्षक का दायित्व है।

बोध प्रश्न

7. निम्न कथनों के समक्ष हां अथवा नहीं लिखिए।

1. अंत्याक्षरी में स्वरचित कवितायें ही प्रस्तुत की जाती हैं। [ ]
2. कवि दरबार में कवियों की साक्षात् उपस्थिति अनिवार्य है। [ ]
3. नाटक के मंचन से छात्रों को नाटक की समालोचना करने में सहायता मिलती हैं। [ ]
4. शिक्षण करते समय मौखिक उदाहरण के अन्तर्गत दृष्टांत दिये जा सकते हैं। [ ]
5. हिन्दी शिक्षण में पाठ्य सहगामी क्रियाएँ समय को नष्ट करती हैं। [ ]

4.6 हिन्दी शिक्षक के गुण एवं अपेक्षाएँ

आप हिन्दी भाषा के शिक्षक बनने की तैयारी कर रहे हैं। अत: आप स्वयं में किन गुणों का विकास करें और आपसे क्या अपेक्षायें हैं, इसकी चर्चा करेंगे।

4.6.1 शिक्षक के गुण

1. शिक्षक राष्ट्र निर्माता होता है एवं हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है। अत: हिन्दी का शिक्षक बालकों में हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम, श्रद्धा एवं सेवा का भाव उत्पन्न कर राष्ट्र को वाणी दे सकता है तथा शिक्षार्थियों में राष्ट्रीय भावना का विकास कर सकता है।

2. शिक्षक का स्वर प्रभावी, ओजपूर्ण, मधुर, स्पष्ट तथा उच्चारण प्रवाहपूर्ण एवं स्वर के उचित उतार-चढ़ाव से युक्त होना चाहिये। अपनी बात स्पष्ट करने व भावानुकूल शिक्षण करने की योग्यता एवं क्षमता उसमें अवश्य होनी चाहिए।

3. अभिव्यक्ति की कुशलता हिन्दी शिक्षक का गुण होना चाहिए। ज्ञानार्जन के पश्चात् अपने ज्ञान की प्रभावशाली अभिव्यक्ति उसकी विशेषता है।

4. शिक्षक भाषा का माध्यम है अर्थात् शिक्षक को चाहिए कि सदा अपनी भाषा का संवर्धन करता रहे एवं भाषायी सम्प्रेषण प्रभावशाली बनाये।

5. हिन्दी शिक्षक का कलात्मक होना भी एक गुण है। साहित्य के कला पक्ष एवं भाव पक्ष को पहचान कर योग्यता एवं भाव से पाठों का अध्यापन करने में उसे सिद्धहस्त होना चाहिए।

6. हिन्दी का शिक्षक अन्वेषण प्रवृत्ति का होगा, तो शिक्षार्थी में अन्वेषण प्रवृत्ति की जागृति होगी। इससे शिक्षार्थी अन्वेषणों के माध्यम से अपने ज्ञान स्तर को विकसित कर सकेंगे। शिक्षक ही इसके लिए छात्रों को प्रेरित कर मार्ग दर्शन कर सकते हैं।

7. हिन्दी शिक्षक की रसग्राह्यता का गुण नयी पीढ़ी में सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक कत्तर्व्य एवं उचित मूल्यों के उन्नयन में सहायक होगा।

8. हिन्दी शिक्षक को सहृदय एवं सहानुभूतिपूर्ण होना आवश्यक है। छात्रों से उसका व्यवहार आत्मीय हो एवं उनकी कठिनाइयों को समझकर समाधान करने की योग्यता भी उसमें होनी चाहिये। इससे शिक्षार्थियों में हिन्दी भाषा के प्रति रुचि जागृत होगी तथा उनके व्यवहार में परिमार्जन होगा।

9. हिन्दी शिक्षक को सृजनशील एवं रचनात्मक होना आवश्यक है। साहित्य व भाषा दोनों प्रकार के अध्ययन में उसकी सृजनशीलता एवं रचना यथा - शब्द रचना, वाक्य रचना, सन्दर्भ लेखन एवं काव्य रचना आदि अत्यंत महत्वपूर्ण है।

10. हिन्दी शिक्षक में साहित्यिक अभिरुचि होनी चाहिये एवं उसे साहित्यिक क्रियाओं की जानकारी होनी चाहिये।

11. हिन्दी शिक्षक का श्यामपट्ट लेख स्पष्ट एवं सुन्दर होना चाहिए। वह शब्दों की शुद्ध वर्तनी का ज्ञाता हो तथा उसका उच्चारण शुद्ध एवं स्पष्ट हो। वह आरेखन, रेखा-चित्रांकन आदि की कला में निपुण हो।

4.6.2 हिन्दी शिक्षक से अपेक्षाएँ

ऊपर लिखे गुणों का विकास करना एक शिक्षक के नाते आपका कर्तव्य है, किन्तु समाज व राष्ट्र तथा हिन्दी भाषा के छात्र आपसे विशेष अपेक्षाएँ रखते हैं :-

1. हिन्दी का शिक्षक साहित्य प्रेमी व साहित्य अन्वेषक हो, ताकि नित-प्रतिदिन के ज्ञान में वृद्धि कर सके।

2. वह पारम्परिक के साथ समसामयिक साहित्यिक ज्ञान भी रखे एवं शिक्षण के समय अनुकूल वातावरण की सृष्टि कर सके।

3. छात्रों में हिन्दी भाषा के प्रति जागरूकता का विकास करना उसका कर्तव्य है।

4. हिन्दी साहित्य के प्रतिमानों का सजग प्रहरी बना रहे एवं साहित्य के दुर्ग की सतत रक्षा करे।

5. विद्यालय में हिन्दी भाषाई व साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन करें एवं छात्रों को उनमें भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

6. छात्रों में भी साहित्यिक अभिरुचि का विकास करे, साहित्यिक योग्यता का विकास करे एवं विद्यालय में साहित्यिक वातावरण का निर्माण करे।

7. हिन्दी शिक्षक से यह अपेक्षा है कि वह भाषा एवं साहित्य के शिक्षण को ही महत्व प्रदान करे। उस का प्रत्येक कार्य, श्रव्य-दृश्य सामग्री एवं उपकरणों का प्रयोग, पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन आदि सभी हिन्दी भाषा एवं साहित्य के संवर्धन के लिए हों।

बोध प्रश्न

8. हिन्दी शिक्षक के गुणों का संक्षेप मे उल्लेख कीजिए। उत्तर पांच'पंक्तियों में लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4.7 सारांश

4.7.1 महत्व

हिन्दी शिक्षण में पाठ्य पुस्तक एवं सहायक पुस्तक एक महत्वपूर्ण साधन हैं। पाठय पुस्तक कक्षा के लिए आधार का कार्य करती है। यह शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों को अपने विषय के सीमा विस्तार के प्रति सजग रखती है। यह शिक्षार्थी को स्वाध्याय के लिए प्रेरित करती है। हिन्दी भाषा एवं साहित्य के अध्ययन एवं अध्यापन के लिए पाठ्य पुस्तक अनिवार्य है।

4.7.2 स्वरूप

पाठ्य पुस्तक निर्माण के दो पक्ष हैं - बाह्य पक्ष तथा आन्तरिक पक्ष। बाह्य पक्ष के अंतर्गत पाठ्य पुस्तक का बाह्य स्वरूप, उसके पाठों का आयोजन, टंकण, मुद्रण, चित्रों के रंग, बाह्य जिल्द,मूल्य, कागज का प्रकार एवं सम्पूर्ण पुस्तक का प्रस्तुतीकरण समाहित होता है।

आन्तरिक पक्ष विषय सामग्री से सम्बन्धित है। विषय सामग्री शिक्षार्थियों के मानसिक स्तर के अनुकूल हो तथा निर्धारित पाठयक्रम के अनुसार हो। विषय वस्तु में विविधता हो, साहित्यिक विधाओं - नाटक, कहानी, कविता, निबन्ध सभी का सन्तुलित सम्मिश्रण हो। प्रत्येक काल के रचनाकारों की रचनाओं का सम्मिश्रण भी आवश्यक है।

प्रत्येक पाठ के साथ उसका संक्षिप्त सारांश एवं पाठ के अन्त में अभ्यास के सभी प्रकार के प्रश्न यथा - दीर्घ उत्तर प्रश्न, लघु उत्तर प्रश्न एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का सम्मिश्रण हो।

4.7.3 हिन्दी भाषा शिक्षण में श्रव्य-दृश्य सामग्री

हिंदी भाषा शिक्षण में श्रव्य-दृश्य सामग्री भाषा शिक्षण को सजीवता व सरलता प्रदान करती है। दृश्य सामग्री के अन्तर्गत यांत्रिक उपकरण - प्रोजेक्टर, ओवर हैड प्रोजेक्टर, मैजिक लैंटर्न, चित्र विस्तारक आदि हैं एवं सहज दृश्य साधनों के अन्तर्गत हैं - चार्ट, चित्र, पोस्टर, मानचित्र, रेखाचित्र, खादी बोर्ड एवं श्यामपट्ट।

श्रव्य यांत्रिक उपकरण हैं - रेडियो, टेपरिकार्डर एवं लिंग्वाफोन।

मौखिक उदाहरण, उद्धरण एवं वास्तविक पदार्थ भाव एवं अर्थ स्पष्ट करने में सहायक होते हैं।

4.7.4 हिंदी शिक्षण में पाठ्य सहगामी क्रियाएँ

हिन्दी शिक्षण में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अंतर्गत कवि सम्मेलन, कवि गोष्ठी, कविता गान, कवि दरबार, समस्यापूर्ति, कविता पाठ, प्रतियोगिता, अंत्याक्षरी, अभिनय, सारस्वत यात्रा आदि का आयोजन किया जा सकता है।

4.7.5 हिन्दी शिक्षक के गुण

वह शिक्षार्थियों में राष्ट्रीय भावना का विकास करने वाला हो, सतत अध्यनशील हो, अन्वेषण प्रवृत्ति का हो, सहृदय, सहानुभूति पूर्ण एवं आत्मीय व्यवहार वाला हो, तथा साहित्यिक रुचि रखता हो।

हिन्दी भाषा शिक्षक से समाज, राष्ट्र एवं शिक्षार्थी अनेक अपेक्षाएँ रखते हैं उनकी पूर्ति के लिए शिक्षक समसामयिक साहित्यिक ज्ञान से परिचित रहे, शिक्षार्थियों में भाषा के प्रति जागरूकता का विकास करे। विद्यालय में साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन करे एव साहित्यिक वातावरण का निर्माण करे।

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. पाठ्यपुस्तक के अध्ययन पक्ष की विशेषताएँ-

1) विविधता से पूर्ण विषय सामग्री
2) सभी काल के साहित्यकारों की रचनायें
3) छात्र के मानसिक स्तर के अनुरूप
4) विषय की गंभीरता
5) भाषाई उत्कृष्टता

2. **पाठ्य पुस्तक के गुण -**

1) भाषा के ज्ञान की वृद्धि
2) रोचकता
3) जीवन से संबद्धता
4) आदर्श वादिता
5) व्यावहारिकता

3. **पाठ्य पुस्तक के रूपात्मक पक्ष की विशेषताएँ -**

1) आकार-पुस्तक पकड़ने में सविधा हो
2) मुख पृष्ठ आकर्षक हो
3) कागज अच्छा, मोटा और सफेद हो
4) जिल्द अच्छी हो
5) मूल्य सामान्य हो

4. पाठ्य पुस्तक गंभीर अध्ययन के लिए होती है, सहायक पुस्तक व्यापक अध्ययन के लिए होती है। पाठ्य पुस्तक कक्षा में शिक्षक द्वारा पढ़ाई जाती है, सहायक पुस्तक शिक्षार्थी द्वारा स्वयं पढ़ने के लिए होती है। पाठ्य पुस्तक में प्राप्त भाषाई दक्षताओं की पुष्टि सहायक पुस्तक द्वारा होती है।

5. दृश्य-श्रव्य सामग्री

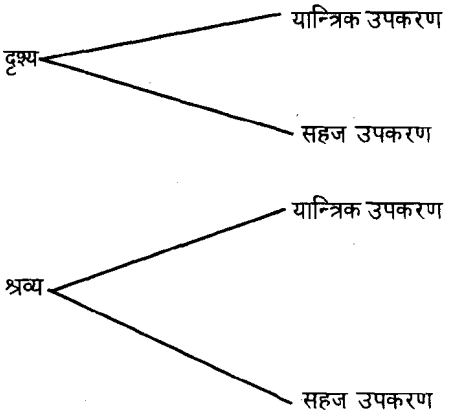

मौखिक उदाहरण/उद्धरण सहज, शिक्षक द्वारा प्रस्तुत

6. आकाशवाणी तथा दूरदर्शन की कार्यक्रम पत्रिका/कार्यक्रम सूची से हिन्दी भाषा शिक्षण के प्रसारणों के दिनांक एवं समय ज्ञात कर तदनुसार शिक्षार्थियों को आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के कार्यक्रम सुनाए तथा दिखाए जा सकते हैं। पाठ समाप्ति के अनन्तर प्रसारित पाठ के विषय में छात्रों से चर्चा की जा सकती है। शिक्षार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया जा सकता है तथा अंत में पाठ के विषय में गृहकार्य दिया जा सकता है।

7. 1. नहीं
2. नहीं
3. हाँ
4. हाँ
5. नहीं

8. शिक्षक के प्रमुख गुण -

- सतत अध्यनशील हो
- अन्वेषण प्रवृत्ति का हो।
- सहृदय, सहानुभूतिपूर्ण एवं आत्मीय व्यवहार वाला हो।
- साहित्यिक रुचि वाला हो।

4.9 उपयोगी पुस्तकें

सिंह, निरंजन कुमार : माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।

पांडेय, रामशकल : हिन्दी शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

कौशिक, जयनारायण : हिन्दी शिक्षण, हरियाणा साहित्य अकादमी।